19 जननायक कर्पूरी ठाकुर

बिहार की विभूतियों में जननायक कर्पूरी ठाकुर अत्यंत सम्माननीय हैं। इस पाठ में उनकी जीवन यात्रा के उल्लेखनीय पहलुओं का उद्‌घाटन किया गया है, जिससे उनकी जीवन-दृष्टि, संघर्षों, राजनैतिक विवेक के साथ-साथ मानवीय मूल्यों का पता चलता है।

P4CAFY

"हो सकता है कि विद्याध्ययन के पश्चात् मुझे कोई पद प्राप्त हो जाए। मैं बहुत आराम और ऐश-इशरत में दिन बिताऊँ। बड़ी कोठी, घोड़ा-गाड़ी, नौकर इत्यादि दिखावट के सभी सामान मुझे मयस्सर हों-. ....पर मुल्क का भी मुझ पर दावा कुछ कम नहीं है। अभी भारत माता परतंत्रता की पीड़ा से कराह रही है और मैं विद्याभ्यास के लिए अपनी पढ़ाई जारी रखूँ। यह मुमकीन नहीं है सर। जब तक देश के प्रत्येक निवासी को सम्मानजनक और सुविधा-संपन्न स्वाधीन जीवन-यापन करने का अवसर नहीं मिलेगा, तब तक मेरे परिजनों को भी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।"

ये अल्फ़ाज हैं ग़रीबों के मसीहा, जननायक कर्पूरी ठाकुर के। जिनमें बचपन से ही नेतृत्व क्षमता थी। 1942 ई० में अगस्त क्रांति के दौरान उन्होंने स्वयं तो कॉलेज का त्याग किया ही, साथ-ही-साथ दरभंगा, मुज़फ़्फ़रपुर एवं आस-पास के शहरों के सभी स्कूलों और कॉलेजों में जा-जाकर छात्रों को बहिष्कार के लिए प्रेरित करते रहे। लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा गठित "आज़ाद दस्ता" के वे सक्रिय सदस्य थे। तंग आर्थिक स्थिति से निजात पाने के लिए उन्होंने गाँव के ही मध्य विद्यालय में 30 रुपये प्रतिमाह की दर पर प्रधानाध्यापक का पद स्वीकार किया। दिन में स्कूल में अध्यापन कार्य करते और रात में आज़ाद दस्ता के सदस्य के रूप में जो भी ज़िम्मेदारी मिलती उसे बखूबी निभाते। 23 अक्टूबर 1943 ई० को रात्रि लगभग दो बजे वे गिरफ्तार कर लिए गए और दरभंगा जेल में डाल दिए गए। यह उनकी पहली जेल-यात्रा थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 1952 ई० के प्रथम आम चुनाव में समस्तीपुर के ताजपुर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से कर्पूरी ठाकुर सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर भारी बहुमत से विजयी रहे। बाढ़, भूख, ग़रीबी, बेकारी, भ्रष्टाचार, भूमि-सुधार, महँगाई, विकास इत्यादि समस्याओं पर उन्होंने विधानसभा के अंदर ज़ोरदार आवाज़ बुलंद की। सन् 1952 से 1988 के अपने जीवन के अंतिम दिन तक बिहार विधानसभा के सदस्य रहे। इस दौरान बिहार विधानसभा के कार्यवाहक अध्यक्ष, विरोधी दल के नेता, उपमुख्यमंत्री एवं दो बार बिहार राज्य के मुख्यमंत्री भी बने।

बात सन् 1957 की है। कर्पूरी ठाकुर गाँवों का दौरा कर रहे थे। उसी दौरान उन्होंने

देखा कि एक हैज़ा पीड़ित अपने जीवन का अंतिम क्षण गिन रहा था। अस्पताल वहाँ से काफी दूर था और उसे अस्पताल ले जाने के लिए कोई सड़क-मार्ग नहीं था। उसके परिजन उसे मरते देखने के लिए विवश थे। लेकिन कर्पूरी ठाकुर ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने उस हैजा पीड़ित व्यक्ति को अपने कंधे पर उठाया और करीब पाँच कि०मी० पैदल चलकर उसे अस्पताल पहुँचाकर ही दम लिया। जन सेवा और क्षेत्र के लोगों से जुड़ाव की मिसाल कम ही देखने को मिलती है। उनके जीवन की ऐसी अनेक घटनाएँ हैं जिनमें उनका जनपक्षीय व्यक्तित्व उभरता है। पहली बार सचिवालय स्थित अपने कार्यालय कक्ष में जाने के लिए पहुँचे तो उन्हें ऊपरी तल पर ले जाने के लिए लिफ्ट से ले जाया गया। लिफ्ट के ऊपर अंग्रेजी में लिखे वाक्य को पढ़ते ही चौंक पड़े-"only for officers". शेष कर्मचारियों का आना-जाना सीढ़ियों से होता था। यानि केवल राजपत्रित पदाधिकारी ही लिफ्ट का प्रयोग कर सकते थे। अराजपत्रित कर्मचारियों को मनाही थी। उन्हें सीढ़ी से आना-जाना पड़ता था। कर्पूरी ठाकुर को इसमें सामंती प्रथा की बू आई। उन्होंने सरकार के वरीय अधिकारियों के प्रतिरोध के बावजूद लिफ्ट का प्रयोग सबके लिए आम कर दिया। यानी अब अराजपत्रित कर्मचारी के साथ-साथ सचिवालय में काम से आनेवाले अन्य लोग भी लिफ्ट का प्रयोग कर सकते थे।

महान बनना तो सहज है, लेकिन ऐसा बनना कि हर किसी को लगे कि वह तो अपने घर का है, अपना है, बहुत मुश्किल है। ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व के धनी श्री कर्पूरी ठाकुर का जन्म समस्तीपुर के निकट पितौंझिया नामक गाँव में 24 जनवरी 1921 को हुआ। उनकी माता का नाम रामदुलारी देवी और पिता का नाम गोकुल ठाकुर तथा पत्नी का नाम फुलेसरी देवी था।

ठाकुर जी का बाल्यकाल अन्य ग़रीब परिवार के बच्चों की ही तरह खेल-कूद तथा गाय और अन्य पशुओं के चराने में बीता। कर्पूरी जी को दौड़ने और तैरने का शौक था। जब छह वर्ष के हुए तभी उन्हें गाँव की पाठशाला में दाखिल कराया गया। वे पाठशाला भी जाते थे और पशुओं को चराते भी थे। चरवाही में ग्रामीण गीतों का गायन बिहार की आंचलिक संस्कृति की एक विशिष्ट परंपरा है। बालक कर्पूरी इसमें विशेष रुचि लेता था। श्री राजेन्द्र शर्मा लिखते हैं ''इन्हें गीत गाने का और गाँव की मंडली में डफ बजाने का भी शौक था। होली और चैत गाने में गाँव की मंडली में बराबर अगुआगिरी करते रहे। मंडली में बैठकर डफ बजाने का काम तो वे विधायक बन जाने पर भी करते रहे।''

सन् 1940 ई० में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की। दरभंगा के चंद्रधारी मिथिला कॉलेज में उन्होंने आई० ए० में नाम लिखवाया। लेकिन कॉलेज आना-जाना एक कठिन काम था। आर्थिक अवस्था इतनी अच्छी नहीं थी कि वे किसी छात्रावास में रहकर पढ़ते। फलतः वे घर से ही घुटने तक धोती पहने, कंधे पर गमछा रखे, बिना जूता-चप्पल पहने, पाँव-पैदल चलकर मुक्तापुर रेलवे स्टेशन पहुँचते थे। वहीं से रेलगाड़ी पकड़कर दरभंगा पहुँचते और कॉलेज में दिनभर पढ़कर संध्या समय लौटते। इस तरह नित्य 50-60 किलोमीटर

की यात्रा करते हुए उन्होंने कठिन शारीरिक श्रम के साथ दो वर्ष तक पढ़ाई जारी रखी। इतना कठोर जीवन बिताते हुए उन्होंने 1942 ई० में आई०ए० की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में पास की।

स्नातक कला के प्रथम वर्ष में उसी कॉलेज में उन्होंने नामांकन कराया। लेकिन वे 1942 ई० के अगस्त क्रांति में कूदने से अपने को रोक न सके। दरभंगा जिले में कुव्यवस्था के खिलाफ़ उन्होंने कैदियों को संगठित करना शुरू किया।

फलस्वरूप इन्हें गिरफ्तार कर भागलपुर कैम्प जेल स्थानांतरित कर दिया गया। भागलपुर कैम्प जेल में कैदियों की सुविधा के लिए 25 दिनों का उपवास कर सरकार को झुकने को मजबूर किया। 1952 ई० से 1988 तक लगातार विधानसभा के सदस्य निर्वाचित होते रहे। 1967 ई० में बिहार के उपमुख्यमंत्री तथा 1970 एवं 1977 में बिहार के मुख्यमंत्री पद को सुशोभित किया। दलगत राजनीति से कर्पूरी ठाकुर को गहरा धक्का लगा। 12 अगस्त 1987 को उन्हें विपक्ष के नेता पद से हटाया गया। 17 फरवरी 1988 को हृदयाघात के कारण इस महान विभूति का निधन हो गया।

– पा.पु.वि.स.

शब्दार्थ

मयस्सर	–	उपलब्ध
मुमकिन	–	संभव
प्रतीक्षा	–	इंतज़ार
सर्वदलीय	–	सभी दलों का
अल्फाज़	–	शब्द
निष्कर्ष	–	नतीजा
खानगी	–	घर का, घरेलू, निजी

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. कर्पूरी ठाकुर अपने परिजनों को प्रतीक्षा करने के लिए क्यों कहते हैं।
2. मैट्रिक के बाद उच्च शिक्षा के लिए उन्हें कहाँ और किस प्रकार जाना पड़ता था ?
3. कर्पूरी ठाकुर को कौन-कौन सा कार्य करने में आनन्द मिलता था ?
4. सचिवालय स्थित कार्यालय में पहले दिन उन्होंने कैसा दृश्य देखा तथा उसपर उन्होंने क्या निर्णय लिया ?

पाठ से आगे

1. अपने अध्ययन के दौरान आपको किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है ।
2. आपको दिन भर में बहुत सारे काम करने पड़ते हैं। यथा-कॉमिक्स पढ़ना, खेलना, छोटे भाइयों की देख-रेख करना, खाना बनाने में सहयोग करना, परीक्षा की तैयारी करना, सोना आदि । आप किन कार्यों पर कितना समय देंगे और क्यों?

व्याकरण

अनेक शब्दों के बदले एक शब्द

भाषा की सुदृढ़ता, भावों की गंभीरता और चुस्त शैली के लिए यह आवश्यक है कि लेखक शब्दों के प्रयोग में संयम से काम लें ताकि वह विस्तृत विचारों या भावों को थोड़े-से शब्दों में व्यक्त कर सके।

'गागर में सागर भरना' कहावत यहीं चरितार्थ होती है। विस्तृत विचारों या भावों को थोड़े शब्दों में 'अनेक शब्दों के बदले एक शब्द' की जानकारी से प्रस्तुत की जा सकती है।

जैसे:

(क) जो दीनों के बंधु हों – दीनबंधु

(ख) विभिन्न विषयों पर विचार करनेवाला – विचारक।

(ग) सामाजिक कुरीतियों को दूर करनेवाला – समाज-सुधारक ।

(घ) बिना शुल्क का – निःशुल्क

समास : दो या दो से अधिक पदों के अपने बीच की विभक्ति को छोड़कर जो नया शब्द बनता है उसे समास कहते हैं। जैसे- गंगा का जल-गंगाजल

समास के मुख्यतः छः भेद है-

1. **अव्ययीभाव** : जिस समास में पूर्वपद प्रधान हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इस समास में पहला पद अव्यय होता है। जैसे- यथाशक्ति, प्रतिदिन आदि।
2. **तत्पुरुष** : जिस समास में अंतिम पद प्रधान हो उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे- राष्ट्रपति, रसोईघर आदि।
3. **कर्मधारय** : जिस समास में विशेष्य-विशेषण हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे- नीलगाय, चंद्रमुखी आदि।
4. **द्वंद्व** : जिस समास में दोनों पद प्रधान हो उसे द्वंद्व समास कहते हैं। जैसे- भाई-बहन, राधा-कृष्ण आदि।
5. **द्विगु** : जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे- पंचवटी, त्रिभुज आदि।
6. **बहुव्रीहि** : समास में आए पदों को छोड़कर जब किसी अन्य पद की प्रधानता हो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे- पीताम्बर, वीणापाणि आदि।

गतिविधि

1. चारवाही/रोपनी के दौरान आपके क्षेत्र में गाये जानेवाले गीतों में से कोई एक गीत लिखिए।
2. अपने गाँव-जवार के किसी गायक या वादक से मिलकर उनके अनुभवों को सुनकर अपने शब्दों में लिखिए।